

हंद के भेद ।

अह वण और मात्रा के विचार से

हंद के चार भेद हैं

(I) वार्षिक हंद — केवल वण-गणना के आधार पर रचा गया हंद वार्षिक हंद कहलाता है। वृत्तों की तरह इसमें लघु-गुरु का क्रम निश्चित नहीं होता। वार्षिक हंद के दो भेद हैं— (I) साधारण (II) दण्डक।

(II) वार्षिक वृत्त — वृत्त उस समय हंद को कहते हैं, जिनमें चार समान चरण रहते हैं और प्रत्येक चरण में आने वाले वणों का लघु-गुरु क्रम सुनिश्चित होता है। गणों में वणों का बाँधा होना प्रमुख लक्षण होने के कारण इसे वार्षिक वृत्त, गणबद्ध या गणात्मक हंद भी कहते हैं।

(III) मात्रिक हंद — मात्रा की गणना पर आधारित हंद, मात्रिक हंद कहलाता है। इसमें वार्षिक हंद के विपरीत, वणों की संख्या भिन्न हो सकती है और वार्षिक वृत्त के अनुसार यह गणबद्ध भी नहीं है, बल्कि यह गणपद्धति या वणसंख्या को छोड़कर केवल चरण की कुल

मात्रासंख्या के आधार पर ही नियमित है। दोहा और चौपाई आदि छंद मात्रिक छंद में गिने जाते हैं। दोहा के प्रथम-तृतीय चरण में 13 मात्राएँ व द्वितीय-चतुर्थ चरण में 11 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरणार्थ -

प्रथम चरण - श्री गुरु चरन सरोज रज
- 13 मात्राएँ

द्वितीय - निज मन मुकुट सुधार
- 11 मात्राएँ

तृतीय - वरनो रघुवर विमल यस
- 13 मात्राएँ

चतुर्थ - जो दायक फल चार
- 11 मात्राएँ

(II) मुक्त छंद - चरणों की अनियमित, असमान, स्वच्छंद गति और मात्रा नुसूल यतिविधान ही मुक्त छंद की विशेषता है। इसका कोई नियम नहीं है। यह एक प्रकार का लयात्मक काव्य है जिनमें पद्य का प्रवाह अपेक्षित नहीं है। निराला से लेकर नयी कविता तक इसका प्रयोग आध्यत्मिक वृत्तों में है।